पाठ 8

# हार की जीत

(प्रस्तुत कहानी में एक डाकू के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।)

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द आता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुन्दर व बलवान था। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे "सुल्तान" कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्हांेने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूँगा," उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गयी थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देख कर नाच रहा हो। जब तक सन्ध्या समय सुल्तान पर चढ़ कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो

उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया

बाबा भारती ने पूछा 'खड्गसिंह क्या हाल है?'

खड्गसिंह ने सिर झुका कर उत्तर दिया, 'आपकी दया है।'

'कहो, इधर कैसे आ गये।'

'सुल्तान की चाह खींच लायी।'

'विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।'

'कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है।'

'क्या कहना जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'

'बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।'

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमण्ड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ। कुछ देर तक आश्चर्य से

चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, 'परन्तु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?'

बाबा जी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गये। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द जा जाय उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, 'बाबाजी मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।'

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

सन्ध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आयी, 'ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।'

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, 'क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?'

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, 'बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।'

'वहाँ तुम्हारा कौन है?'

'दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।'

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। वह अपाहिज डाकू खड्ग सिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, 'जरा ठहर जाओ।'

खड्ग सिंह ने आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।'

'परन्तु एक बात सुनते जाओ।'

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा, 'यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा।'

बाबा जी आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।

'अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं कहा कि 'इस घटना को किसी के

सामने प्रकट न करना।' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दी और पूछा, 'बाबा जी इसमें आपको क्या डर है?'

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया 'लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।' यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गये, परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है। उन्हें इस घोड़े से प्यार था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, 'इसके बिना मैं न रह सकूँगा।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोये नहीं। भजन-भक्ति न कर, रखवाली करते रहे। परन्तु आज उनके मुख पर दु:ख की रेखा तक न दिखायी पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात के अन्धकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनायी न देता था। खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चैथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परन्तु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अन्दर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे सन्तोष से बोले, 'अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।'

- सुदर्शन

सुदर्शन का वास्तविक नाम बद्रीनाथ भट्ट था। इनका जन्म सन् 1896 ई0 में पंजाब स्थित सियालकोट में हुआ था। कक्षा छह में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी थी। कहानी के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवनी, बालसाहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह 'पुष्पलता', 'सुप्रभात', 'परिवर्तन', 'पनघट', 'नगीना' आदि हैं। आपका उपन्यास 'भागवन्ती' है। आपने अपनी कहानियों में आदर्श की प्रतिष्ठा की है। सन् 2008 में इनका देहावसान हो गया।

**शब्दार्थ**

**अर्पण**=देना, प्रदान करना, भेंट करना। **असबाब**=सामान। **कीर्ति**=यश। **अभिलाषा**=इच्छा। **अस्तबल**=घुड़साल, तबेला। **सहस्रों**=हजारों। **बाँका**=सुन्दर और बना-ठना। **बाहुबल**=भुजाओं की शक्ति। **नाईं**= तरह, समान। **मिथ्या**=झूठ। **कंगले**=गरीब, कंगाल। **प्रयोजन**=उद्देश्य। **दुःख की रेखा**=थोड़ा-सा दुःख। **नेकी के आँसू**=उपकार के भाव, दया का भाव। **प्रतीत**=मालूम होना, विदित। **पाँवों की चाप**=पैरों की आवाज।

प्रश्न-अभ्यास

## कुछ करने को

1. बाबा भारती और खड्गसिंह के रूप में कहानी पर कक्षा मंे अभिनय कीजिए।

2. बाबा भारती ने अपने घोड़े सुल्तान की बचपन से सेवा की और उसकी तारीफ करते नहीं थकते थे। इस प्रकार का कोई पालतू जानवर आपके घर में हो तो उसका वर्णन कीजिए।

## विचार और कल्पना

1. बताइये आपको कहानी का कौन सा पात्र सबसे अच्छा लगा ? और क्यों ?

2. यदि बाबा भारती और खड्गसिंह की मुलाकात अगली बार होगी तो उनके बीच क्या-क्या बातें होंगी ? लिखिए।

3. चित्र को देखकर अपने विचार दस पंक्तियों में लिखिए-

## कहानी से

1. बाबा भारती ने खड्गसिंह से उस घटना को किसी के सामने प्रकट न करने के लिए क्यों कहा ?

2. बाबा भारती द्वारा की गयी प्रार्थना का डाकू खड्गसिंह पर क्या प्रभाव पड़ा ?

3. कहानी के आधार पर नीचे दी गयी घटनाओं को सही क्रम दीजिए-

- बाबा भारती घोड़े के गले से लिपटकर रोने लगे।
- खड्गसिंह ने बाबा भारती की आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और कहा- बाबाजी यह घोड़ा अब न दूँगा।
- बाबा भारती की सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी।
- अपाहिज वेश में खड्गसिंह घोड़े को दौड़ाकर जाने लगा।
- घोड़े की चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया।
- माँ को अपने बेटे और किसान को लहलहाते खेत को देखकर जो आनन्द आता है वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था।
- बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे।
- खड्गसिंह जाते-जाते कह गया- 'बाबाजी यह घोड़ा मैं आपके पास न रहने दूँगा।'
- बाबा ने कहा 'इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना, नहीं तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे'।
- खड्गसिंह ने सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया।

4. इस कहानी के अन्त में किसकी जीत और किसकी हार हुई ?

5. इस कहानी द्वारा लेखक हमें क्या बताना चाहता है ?

6. इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं-बाबा भारती, सुल्तान और खड्गसिंह। कहानी के आधार पर इन तीनों पात्रों की विशेषताओं को स्पष्ट करने वाली तीन-तीन बातें लिखिए।

7- उस संवाद को छाँटकर लिखिए जिसने डाकू खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन कर दिया।

8- कहानी के किस पात्र ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

9- कहानी का शीर्षक है-'हार की जीत' आपके अनुसार इस कहानी के और क्या-क्या शीर्षक हो सकते हैं ? लिखिए।

**भाषा की बात**

1. नीचे लिखे मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए-

वायु वेग से उड़ना, आँखों में चमक होना, दिल टूट जाना, मुँह न मोड़ना, सिर मारना, लट्टू होना, मन भारी होना।

2. नीचे बायीं ओर कुछ विशेषण दिये गये हैं और दायीं ओर कुछ विशेष्य। प्रत्येक विशेषण के साथ उपयुक्त विशेष्य मिलान कर लिखिए-

| विशेषण | विशेष्य |
|---|---|
| लहलहाते | विचार |
| बाँका | खेत |
| अधीर | जल |
| ऊँचे | हृदय |
| ठण्डा | घोड़ा |

3. 'कहो, इधर कैसे आ गये', 'सुल्तान की चाह खींच लायी।'

इनमें से पहला वाक्य बाबा भारती और दूसरा वाक्य डाकू खड्गसिंह का है। बातचीत के वाक्यों को अलग रखने के लिए उन्हें 'उद्धरण चिह्न'(इनवर्टेड कॉमा) में रखा जाता है। कहानी को पढ़कर नीचे दिये गये अनुच्छेद में उपयुक्त स्थान पर उद्धरण चिह्न तथा अन्य विराम चिह्न लगाइए-

अपाहिज ने हाथ जोड़ कर कहा बाबा मैं दुखिया हूँ मुझ पर दया करो रामावाला यहाँ से तीन मील दूर है मुझे वहाँ जाना है घोड़े पर चढ़ा लो परमात्मा भला करेगा वहाँ तुम्हारा कौन है दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा मैं उनका सौतेला भाई हूँ।

4. 'अ' उपसर्ग लगाने से कुछ शब्दों के अर्थ विपरीत हो जाते हैं, जैसे- धीर से अधीर, स्वीकार से अस्वीकार। 'अ' उपसर्ग लगाकर इसी तरह से अन्य पाँच शब्द लिखिए

अवधारणा चित्र-किसी पात्र अथवा विषयवस्तु के बारे में उसकी विशेषता, गुण, लाभ, हानि अथवा घटना के क्रमों के प्रमुख बिन्दुओं का चित्रण करना।

'क' के आधार पर 'ख' को पूरा करें|

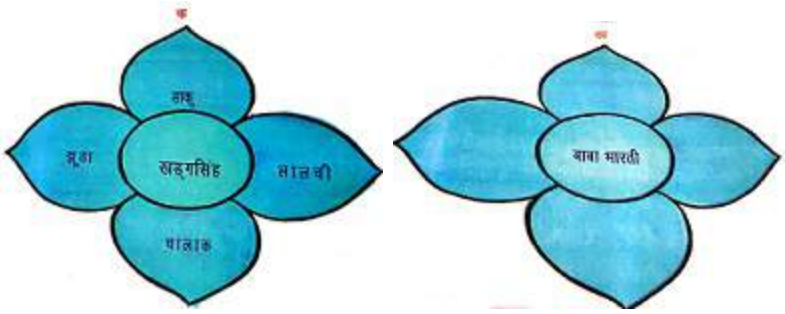


**इसे भी जानें**

**भारत रत्न पुरस्कार- यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा कला, साहित्य, विज्ञान एवं सार्वजनिक सेवा या जीवन के असाधारण एवं अति उत्तम कोटि के कार्य के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार सर्वप्रथम सन् 1954 ई0 में सी0 राजगोपालाचारी, डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन तथा डॉ0 सी0वी0 रमन को मिला।**